International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

Drain of Wealth Theory
धन का निष्कासन

Kavita
Assistant Prof. Tika Ram
P.G. Girls College Sonepat

भूमिका

सबसे पहले दादा भाई नौरोजी ने धन के निष्कासन (Drain of Wealth) से सम्बंधित अपनी किताब "Poverty and Un-British Rule in India" में अपने विचारों को रखा। भारत का अथाह धन भारत से इंग्लैंड जा रहा था। धन का यह अपार निष्कासन (Drain of Wealth) भारत को अन्दर-ही-अन्दर कमजोर बनाते जा रहा था।

Drain of Wealth Theory

ब्रिटिश शासक भारतीयों को बलपूर्वक बहुत-सी वस्तुएँ यूरोप (ब्रिटेन छोड़कर) को निर्यात के लिए बाध्य करते थे। इस निर्यात से बहुत मात्रा में आमदनी होती थी क्योंकि अधिक से अधिक माल निर्यात होता था। पर इस अतिरिक्त आय (surplus income) से ही अंग्रेज़ व्यापारी ढेर सारा माल खरीदकर उसे इंग्लैड और दूसरी जगहों में भेज देते थे। इस प्रकार अंग्रेज़ दोनों तरफ स संपत्ति प्राप्त कर रहे थे। इन व्यापरों से भारत को कोई भी प्राप्त नहीं होता था। साथ ही साथ भारत से इंग्लैड जाने वाले अंग्रेज़ भी अपने साथ बहुत सारे धन ले जाते थे। कंपनी के कर्मचारी वेतन, भत्ते, पेंशन आदि के रूप में पर्याप्त धन इकठ्ठा कर इंग्लैंड ले जाते थे। यह धन के निष्कासन (Drain of Wealth) को इंग्लैंड एक ''अप्रत्यक्ष उपहार'' समझकर हर वर्ष भारत से पूरे अधिकार के साथ ग्रहण करता था। भारत से कितना धन इंग्लैंड ले जाया गया, उसका कोई हिसाब नहीं है क्योंकि सरकारी आँकड़ों (ब्रिटिश आँकड़ो) के अनुसार बहुत कम धन-राशि भारत से ले जाया गया। फिर भी इस धन के निष्कासन(Drain of Wealth) के चलते भारत की अर्थव्यवस्था पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा। धन निष्कासन (Drain of Wealth) के प्रमुख स्त्रोत की पहचान निम्नलिखित रूप से की गई थी:

1. ईस्ट इंडिया कम्पनी के कर्मचारियों का वेतन, भत्ते और पेंशन
2. बोर्ड ऑफ कण्ट्रोल एवं बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स का वेतन व भत्ते

3. 1858 के बाद कंपनी की सारी देनदारियाँ
4. उपहार से मिला हुआ धन
5. निजी व्यापार से प्राप्त धन
6. साम्राज्यवाद के विस्तार हेतु भारतीय सेना का उपयोग किया जाता था, जिससे रक्षा बजट का बोझ भारत पर ही पड़ता था (20 वीं सदा की शुरूआत में यह रक्षा बजट 52% तक चला गया था)
7. रेल जैसे उद्योग में में धन लगाने वाले पूंजीपतियों को निश्चित लाभ का दिया जाना आदि

धन की निकासी

भारत में विदेशी व्यापार का स्वरूप नहीं बदला बल्कि भारी मात्रा में धन का निकास होने लगा जो भारतीयों के लिए गंभीर विषय बन गया।

बंगाल में दीवनी प्राप्त करने के पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापार एकतरफा था- भारत को बचेने के लिए उसके पास कुछ नहीं था जबकि भारतीय वस्तुओं की उसे आवश्यकता थी जिसका व्यापार कंपनी के लिए बहुत ही लाभदायक था। इंग्लैंड का ऊनी उद्योग काफी विकसित था पर भारत में ऊनी कपड़े की माँग न थी। इसलिए भारतीय वस्तुओं की आपूर्ति करने के लिए कंपनी को इंग्लैंड से सोना-चाँदी जैसी बहुमूल्य धातूएँ (bullion) भारत लानी पड़ती थीं। पहले इन धातुओं का इंग्लैंड के कुल निर्यात का बहुत अधिक हिस्सा था परंतु 1757 के बाद यह तेजी से घटने लगा क्योंकि कंपनी का बंगााल के राजस्व पर नियंत्रण हो गया था। यह निम्नलिखित आँकड़ों से नजर आता है।

ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत (केवल बंगाल) को भेजे गए कुल निर्यात में बुलियन का भाग इस प्रकार घटता गयाः

वर्ष	प्रतिशत
1711-20	80
1721-30	81
1731-40	73

1741–50	74
1751–56	68
1757–65	13

प्लासी की लड़ाई के उपरांत कंपनी द्वारा भारत में लूट का कार्य आरंभ किया गया। क्लाइव ने स्वयं स्वीकार किया था कि वैध शासन काल में कंपनी और उसके कर्मचारी कंपनी के भविष्य की ओर बिना ध्यान दिए व्यक्तिगत उपहार लेने के सिवा कुछ नहीं सोचते थे। प्रत्येक नरेश या नवाब की नियुक्ति पर उससे अधिकतम धन भेंट या नजराने के रूप में ऐंठा जाता था। व्यापारिक अधिकारों का खुलेआम दुरूपयोग किया गया। 1765 के बाद कंपनी के कर्मचारी खुलआम धन इकट्ठा करके उसे नकली हुंडियों के द्वारा यूरोप भेजने लगे। अनेकों फ्रांसिसी, डेनमार्ग के तथा अन्य वयापारियों को कर्मचारियों द्वारा चोरी-छूपे ऋण की अदायगी करते थे। सन् 1785 में सर जॉर्ज कॉर्नवल लेविस (George Cornwell Lewis) ने संसद में कहा '' मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस धरती पर आज तक कोई भी सभ्य सरकार इतनी भ्रष्ट, इतनी विश्वासघाती और इतनी लुटेरी नहीं पाई गई जितनी 1765 से 1785 के बीच ईस्ट, इंडिया कंपनी की सरकार थी।'' कंपनी की लूट का संकेत क्लाइव द्वारा कोर्ट ऑफ डाइरेक्टरों के नाम लिखे पत्र से स्पष्ट मिलता है जो 1765 में लिखा गया था। उसने लिखाः ''जहाँ तक मैं समझता हूँ, इस अधिग्रहण और..... ... पहले से चले आ रहे कब्जे के द्वारा आगामी वर्षों में मिलने वाला राजस्व 2 करोड़ 50 लाख रूप्यों से कम नहीं होगा। भविष्य में इस राशि में कम-से-कम 20 से 30 लाख की वृद्धि होगी। शांति के दिनों में सैनिक और असैनिक व्यय 60 लाख रूप्ये से अधिक नहीं हो सकताः नवाब के भते पहले से ही कम करके 41 लाख रूप्ये और मुग़ल सम्राट के नजराने 26 लाख रूप्ये कर दिए गए हैं। इस प्रकार कंपनी को 1 करोड़ 22 लाख रूप्ये अर्थात् 4,65,900 पौंड स्टर्लिंग का विशुद्ध लाभ बचा रहेगा।''

जैसा कि सुप्रसिद्ध इतिहासकार इरफ़ान हबीब का कहना है, भारत से कंपनी द्वारा धन की निकासी का सही ब्यौरा तैयार करना बहुत कठिन कार्य है। यह कई बातों पर निर्भर करता है जैसे कि भारत में बनी वस्तुओं के लागत खर्च पर (जो निश्चित रूप से कम प्रतीत होगा क्योंकि कंपनी अपने एकाधिकार के माध्यम से उत्पादकों को उत्पादन खर्च नीचे रखने के लिए मजबूर करती थी) या बिक्री मूल्य पर जो कंपनी को प्राप्त

होता था, या बंगाल से संचालित चीन व्यापार के लागत खर्च (investment) पर यदि हम केवल कंपनी के औपचारिक आँकड़ों को ही ले तो एक स्त्रोत के अनुसार 737, 651 पौंड 1779 में बाहर भेजे गए तथा दूसरे स्त्रोत का अनुमान है कि यह राशि 1,823,407 पौंड की थी। जॉन फरबर (John Furber) के अनुसार 1783-84 से 1792-93 के एक दशक में यह 107.8 करोड़ थी।

इतिहासकारों में दो मत

इस धन-निष्कासन (Drain of Wealth) का भारत पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। दादाभाई नौरोजी ने इसे ''अंग्रेजों द्वारा भारत का रक्त चूसने'' की संज्ञा दी। कई राष्ट्रवादी इतिहासकारों और व्यक्तियों ने भी अंग्रेजों की इस नीति की कठोर आलोचना की है। इतिहासकारों का एक वर्ग (साम्राज्यवादी विचारधारा से प्रभावित) इस बात से इनकार करता है कि अंग्रेजों ने भारत का आर्थिक दोहन किया। वे यहाँ तक सोचते हैं कि इंग्लैंड को जो भी धन प्राप्त हुआ वह भारत की सेवा करने के बदले प्राप्त हुआ। उनका विचार था कि भारत में उत्तम प्रशासनिक व्यवस्था, कानून और न्याय की स्थापना के बदले ही इंग्लैंड भारत से धन प्राप्त करता था। किन्तु इस तर्क में दम नहीं हैं। यह सब जानते हैं कि अंग्रेजों ने भारत का आर्थिक शोषण किया। वे भारत आये ही क्यों थे? क्या उन्होंने दूसरे देशों की **सेवा करने का बीड़ा** उठाया था? सरकारी आर्थिक नीतियों का बहाना बना कर धन का निष्कासन (Drain of Wealth) कर भारत को गरीब बना दिया गया। यह बात इससे स्पष्ट हो जाती हैं कि 19वीं-20वीं शाताब्दी में भारत में कई अकाल पड़े जिनमें लाखों व्यक्तियों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। राजस्व का बहुत ही कम भाग अकाल के पीड़ितो पर व्यय किया जाता था। भूखे गांवों में खाना नहीं पहुँचाया जाता था। अंग्रेजों के इस कृकृत्य से साफ़-साफ़ पता चलता है कि वे भारत की सेवा नहीं वरन् भारत का दोहन करने आये थे।

धन-निष्कासन के दुष्परिणाम - Adverse Consequences of Drain of Wealth

1. धन के निष्कासन (Drain of Wealth) के परिणामस्वरूप भारत में ''पूँजी संचय (capital accumulation) '' नहीं हो सका।
2. लेगों का जीवन-स्तर लगातार गिरता चला गया गरीबी बढ़ती गई।
3. धन के निष्कासन के चलते जनता पर करों का बोझ बहुत अधिक बढ़ गया।
4. इसके साथ साथ कुटीर उद्योगों का नाश हुआ
5. भूमि पर दबाव बढ़ता गया और भूमिहीन कृषि मजदूरों की संख्या बढ़ती चलती गई

Reference

[1]. Bandyopadhyay, Sekhar. 2004. *From Plassey to Partition:* A History of Modern India. New Delhi : Orient Longman.

[2]. Chandra, Bipan. 1966. The Rise and Growth of Economic Nationalism in India. New Delhi: People's Publishing House.

[3]. Dutt, R.C. 1960. The Economic History of India, Volume One: Under Early British Rule 1757-1837, with a critical introduction by D.R. Gadgil. New Delhi: Publication Division. (first published, London 1902) & The Economic History of India, Volume Two: In the Victorian Age 1837-1900, Vol. Two New Delhi: Publications Division. (first published, London 1904).

[4]. Habib, Irfan. 2006. Indian Economy, 1857-1914. New Delhi: Aligarh Historians Society and Tulika Books.

[5]. Mukherjee, Meenakshi. 2009. An Indian for all Seasons: The many lives of R.C. Dutt. New DelhiL: Penguin Books.

[6]. Naoroji, Dadabhai. 1996. Poverty and Un-British Rule in India. New Delhi: Publications Division. Second Indian edition. Frist published London 1901.

[7]. Roy, Rama Dev. 1987. Some Aspects of the Economic Drain from India during the British Rule. Social Scientist. .166: 39-47.

[8]. Roy, Tirthankar. 2000. The Economic History of India, 1857-1947. New Delhi: Oxfrod university Press.

[9]. Sarkar. Sumit. 1983. Modern India: 1885-1947. Delhi: macmillan India Limited.

[10]. Mishra, Girish . Adhunik Bharat ka Arthik Itihaas, New Delhi: Granth Shilpi, 2004.

[11]. Singh V.B. (ed). Economic History of India, 1857-1956 New Delhi : All Publishers, 1975.

[12]. रामलखन शुक्ल. आधुनिक भारत का इतिहास. ISBN 978-93-80172-28-6